SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter
"सीख, सहयोग और संरचना
एक मजबूत नींव का महीना"
अप्रैल
2026

संस्था के सशक्त प्रयासों पर मंथन:

SEP कार्यालय में संपन्न हुई कार्यकारिणी समिति की अहम बैठक

सामाजिक विकास और बच्चों के सर्वांगीण शैक्षणिक सहयोग की दिशा में कार्यरत संस्था की मासिक कार्यकारिणी समिति की एक महत्वपूर्ण बैठक हाल ही में SEP कार्यालय में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। 27 मार्च 2026 को जारी किए गए आधिकारिक नोटिस के आलोक में यह बैठक 10 अप्रैल 2026 को दोपहर 3:00 बजे आयोजित हुई।

बैठक में संस्था के मुख्य पदाधिकारियों सहित 'सीख' (SEEKH), 'सृजन' (SRIJAN) और 'गरिमा' (GARIMA) कार्यक्रमों के कार्यक्रम प्रबंधक एवं परियोजना समन्वयक विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में उपस्थित रहे। बैठक के दौरान संस्था की मार्च माह की प्रगति की समीक्षा की गई और आगामी शैक्षणिक सत्र के लिए कई दूरगामी निर्णय लिए गए।

प्रमुख बिंदु एवं विचार-विमर्श

मार्च माह की समग्र प्रगति:
मार्च महीने के दौरान वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी, उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching), अंतिम मूल्यांकन, डेटा प्रबंधन और क्षमता विकास जैसे मुख्य कार्यों की गहन समीक्षा की गई। सीख केंद्रों में आए बदलावों के बावजूद बच्चों को बिना किसी रुकावट के शैक्षणिक सहयोग दिया गया।

सीख और सृजन शैक्षणिक गतिविधियाँ:
बच्चों में हिंदी, अंग्रेजी, गणित और पर्यावरण अध्ययन के मूलभूत अधिगम को मजबूत करने पर बल दिया गया। इसके साथ ही digital संसाधनों के उपयोग और 'सृजन' कार्यक्रम के मूल्यांकन एवं प्रस्तुतीकरण की समीक्षा की गई।

गरिमा एवं समग्र विकास:
'गरिमा' और 'आदर्श बाल ग्राम' पहलों के तहत बच्चों में संवाद कौशल, रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और सहपाठी अधिगम (Peer Learning) को बढ़ावा देने पर सहमति बनी।

डेटा स्वचालन और रिपोर्टिंग:
मासिक उपस्थिति, अंतिम मूल्यांकन और ऑनलाइन निगरानी व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए स्वचालन (Automation) की दिशा में कदम उठाने पर चर्चा हुई।

क्षमता विकास और प्रशिक्षण:
विभिन्न अधिगम सत्रों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों से मिली सीख को सीधे ज़मीनी स्तर (Field Implementation) पर लागू करने का संकल्प लिया गया।

भावी योजनाएँ और महत्वपूर्ण निर्णय
बैठक के अंतिम चरण में वार्षिक मूल्यांकन के आँकड़ों के आधार पर नए शैक्षणिक सत्र की रूपरेखा तय की गई। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी सत्र में मूलभूत अधिगम (Foundational Learning) को मजबूत किया जाएगा, डिजिटल शिक्षण के दायरे को बढ़ाया जाएगा और संस्थागत डेटा मॉनिटरिंग को अधिक सख्त बनाया जाएगा।

यह बैठक धन्यवाद ज्ञापन के साथ सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हुई।

बैठक में उपस्थित प्रमुख सदस्य

1. श्री अब्दुल वसीम – अध्यक्ष
2. श्री वी. एस. पांडे – उपाध्यक्ष
3. श्री परिमल सिन्हा – महासचिव
4. श्री रिनु वी. कोशी – कोषाध्यक्ष
5. श्री एस. के. समाल – संयुक्त महासचिव
6. श्रीमती भावना नायक – कार्यकारिणी सदस्य
7. श्री अभिषेक कुमार – कार्यकारिणी सदस्य

सृजन प्रोजेक्ट:

अप्रैल में गढ़ी गई नए शैक्षणिक सत्र की मजबूत नींव

अप्रैल के महीने में जहाँ चारों तरफ नए शैक्षणिक सत्र का उत्साह था, वहीं 'सृजन प्रोजेक्ट' की टीम भविष्य की मजबूत नींव तैयार करने में जुटी हुई थी। इस पूरे महीने में शैक्षणिक गुणवत्ता को निखारने और आगामी कार्यक्रमों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए रणनीति बनाई गई।

शिक्षण की प्रक्रिया को अधिक रोचक और गतिविधि-आधारित बनाने के लिए कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के हेतु विज्ञान, गणित और अंग्रेजी विषयों के 'पेडागोजी लेसन प्लान' तैयार किए गए। इन प्लान्स को बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि बच्चे केवल पढ़ें नहीं, बल्कि गतिविधियों, आपसी सहभागिता और अभ्यास के माध्यम से गहराई से सीखें।

इसके साथ ही, बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रयोगात्मक सीख (Practical Learning) को बढ़ावा देने के लिए पूरे साल की रूपरेखा तय की गई। 'साइंस मेला' की एक वर्षीय योजना के तहत लर्निंग रिसोर्स सेंटर (LRC) स्तर से लेकर आगे के चरणों तक मॉडल निर्माण, विषय चयन और आवश्यक सामग्रियों का विस्तृत खाका तैयार हुआ। वहीं, कक्षा 9 और 10 के छात्रों के लिए 'स्टेम (STEM) प्रोग्राम' की वार्षिक रणनीति तैयार की गई, ताकि छात्र मॉडल्स और प्रयोगों के जरिए विज्ञान व गणित को व्यवहार में समझ सकें।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को ध्यान में रखते हुए 'NMMSE' परीक्षा के लिए एक व्यवस्थित खाका तैयार किया गया, जिसमें नियमित अभ्यास, मॉक टेस्ट और बच्चों की प्रगति को ट्रैक करने की पारदर्शी व्यवस्था बनाई गई।

अप्रैल महीने की इस पूरी कवायद ने सृजन प्रोजेक्ट के सभी शैक्षणिक प्रयासों—जैसे लेसन प्लानिंग, असेसमेंट, स्टेम, साइंस मेला और NMMSE—को एक मजबूत फ्रेमवर्क में पिरोने का काम किया है। यह योजना आने वाले महीनों में बच्चों के सीखने के अनुभव को एक नई ऊँचाई देने के लिए पूरी तरह तैयार है।

आदर्श बाल ग्राम:

250 गाँवों में शैक्षणिक क्रांति की नींव, 5-5 गाँवों के क्लस्टर में तैनात हुए

ग्रामीण अंचल के बच्चों के सर्वांगीण विकास और शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से 'संकल्प एक प्रयास' संस्था ने 'आदर्श बाल ग्राम' (Aadarsh Bal Gram) पहल को गति दे दी है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत कुल 250 गाँवों को लक्षित किया गया है, जिन्हें 5-5 गाँवों के सुगठित क्लस्टर (समूह) में बाँटा गया है। प्रत्येक क्लस्टर का नेतृत्व फेलोस द्वारा किया जा रहा है।

अप्रैल माह के दौरान इस संरचनात्मक ढाँचे को मजबूत करने पर विशेष बल दिया गया। योजना के अनुसार, प्रत्येक गाँव में एक समर्पित मैदानी टीम कार्य करेगी जिसमें:

1. **'सीख' कम्युनिटी टीचर** (शैक्षणिक विकास हेतु)
2. **'सृजन' कम्युनिटी टीचर** (सृजनशीलता एवं कौशल विकास हेतु)
3. **' गरिमा दीदी'** (सामुदायिक सहभागिता एवं महिला/बाल सशक्तीकरण हेतु)

यह पूरी टीम स्थानीय स्तर पर बच्चों की बुनियादी शिक्षा, जीवन कौशल और सामुदायिक जुड़ाव को बेहतर बनाने के लिए मिलकर कार्य करेगी।

फाउंडर सर के मार्गदर्शन से तय हुए 'इंडिकेटर्स'

परियोजना को पारदर्शी और नतिजाउन्मुख बनाने के लिए माह में तीन बार संस्था के फाउंडर सर के साथ उच्च स्तरीय बैठकें आयोजित की गई। बैठकों में फाउंडर सर ने पूरी संरचना, मुख्य गतिविधियों (Activities) और उप-गतिविधियों (Sub-activities) की विस्तृत जानकारी दी। इन्हीं दिशा-निर्देशों के आधार पर प्रगति को मापने वाले 'इंडिकेटर्स' (Indicators) अंतिम रूप दिए गए।

पारदर्शिता और त्वरित ट्रैकिंग के लिए इस पूरी प्रणाली को MIS (Management Information System) से जोड़ा जा रहा है, जिससे मैदानी स्तर का सारा डाटा और गतिविधियाँ ऑनलाइन उपलब्ध रहेंगी।

संकल्प से सिद्धि:

सिकोला गाँव की एक नई सुबह

छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव सिकोला की गलियों में बच्चों की खिलखिलाहट तो गूंजती थी, लेकिन वहाँ के LRC केंद्र (संकल्प – एक प्रयास द्वारा संचालित) के बाहर का नज़ारा थोड़ा अलग था। केंद्र के भीतर शिक्षक बच्चों को संस्कारों की वर्णमाला और जीवन के कौशल सिखा रहे थे, लेकिन केंद्र की दहलीज़ के ठीक बाहर फैला कीचड़ और जमा हुआ पानी एक गंभीर खतरे की घंटी बजा रही थी ।

किताबी ज्ञान बच्चों का दिमाग तो रोशन कर रहा था, लेकिन बाहर की गंदगी उनके स्वास्थ्य पर अंधेरा फैलाने को तैयार थी।

एक बैठक, जिसने सोच बदल दी

जब मच्छरों का गुंजन बच्चों की पढ़ाई पर भारी पड़ने लगा, तब शिक्षकों ने एक साहसिक कदम उठाया। उन्होंने केवल शिकायत नहीं की, बल्कि समाधान की राह चुनी। सरपंच और अभिभावकों की एक बैठक बुलाई गई।

शिक्षकों ने एक बहुत ही गहरी बात कही:

"हम इन बच्चों को किताबों से संस्कार तो दे रहे हैं, लेकिन क्या हम उन्हें एक सुरक्षित भविष्य दे पा रहे हैं? याद रखिएगा, एक स्वच्छ वातावरण ही स्वस्थ भविष्य की नींव है। अगर आज हम नहीं जागे, तो कल ये बच्चे बीमार होकर अपनी शिक्षा की नींव खो देंगे।"

श्रमदान: जब 'मैं' से 'हम' का सफर शुरू हुआ

इन शब्दों ने ग्रामीणों के भीतर सोई हुई जिम्मेदारी को जगा दिया। फिर क्या था? अगले ही दिन गाँव ने एक अद्भुत दृश्य देखा। किसी के हाथ में झाड़ू थी, तो कोई फावड़ा लेकर नाली साफ कर रहा था। सरपंच से लेकर सामान्य ग्रामीण तक, सभी 'श्रमदान' के लिए एक साथ आ गए।

देखते ही देखते, वह जगह जो कभी का घर मानी जाती थी, अब दर्पण की तरह चमक रही थी।

बदलाव का असर

इस पहल ने केवल परिसर की सूरत नहीं बदली, बल्कि पूरे सिकोला गाँव के सोचने का तरीका बदल दिया।

बच्चों के लिए प्रेरणा: बच्चों ने अपनी आँखों से देखा कि कैसे एकता में शक्ति होती है। उन्होंने सीखा कि स्वच्छता कोई नियम नहीं, बल्कि एक सामाजिक कर्तव्य है।

सामुदायिक चेतना: गाँव वालों को समझ आया कि सरकार या संस्था के भरोसे बैठने के बजाय, सामूहिक प्रयास से नरक को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

सिकोला की यह कहानी इस बात का जीवंत प्रमाण है कि जब शिक्षक, पंचायत और समुदाय एक संकल्प के साथ हाथ मिलाते हैं, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन की लहर दौड़ पड़ती है। आज सिकोला का LRC केंद्र केवल शिक्षा का मंदिर नहीं, बल्कि स्वच्छता और एकजुटता का प्रतीक बन चुका है।

"शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता का संगम ही बच्चों के उज्ज्वल कल की असली कुंजी है।"

सिलिकॉन वैली टीम के साथ संवाद:

E-Merge प्रोग्राम के जरिए डिजिटल लर्निंग को नई उड़ान

ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के क्रम में 'E-Merge' प्रोग्राम के तहत एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सिलिकॉन वैली की विशेषज्ञ टीम के साथ सत्र 2025–26 की डिजिटल लर्निंग प्रगति रिपोर्ट साझा की गई।

डिजिटल शिक्षा के इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य गाँव के बच्चों को डिजिटल साक्षरता प्रदान करना और उन्हें वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार करना है। अप्रैल माह में E-Merge गतिविधियों के तहत कई प्रमुख कार्य निष्पादित किए गए:

डिजिटल रिपोर्टिंग: मासिक रिपोर्ट, प्रभाव रिपोर्ट (Impact Report) और गतिविधि आधारित वीडियो का निर्माण।

क्षमता संवर्धन: फेलो और शिक्षकों के लिए विशेष अंग्रेजी क्षमता निर्माण (English Capacity Building) सत्रों का आयोजन।

रणनीतिक योजना: लाइब्रेरी रिसोर्स सेंटर (LRC) की वार्षिक योजना और आगामी ग्रीष्मकालीन शिविर (Summer Camp) की दो महीने की विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई।

इसके अतिरिक्त, कार्यों में एकरूपता लाने के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) पर भी गहन काम किया गया, जिससे आगामी महीनों में गतिविधियों का संचालन निर्बाध रूप से हो सके।

मैदानी शोध से हल होंगी गाँव की समस्याएँ:

NCERT और SCERT के आधार पर तैयार हुआ एकीकृत 'लर्निंग आउटकम'

किसी भी योजना की सफलता उसके जमीनी जुड़ाव पर निर्भर करती है। इसी सोच के साथ अप्रैल माह में ABG फेलो द्वारा गहन मैदानी दौरा (Field Work) किया गया। इस दौरान गाँवों की वास्तविक समस्याओं की पहचान की गई और ग्रामीणों के साथ मिलकर उनके संभावित व्यावहारिक समाधान तलाशे गए। इन समाधानों को ही 'आदर्श बाल ग्राम' की नियमित गतिविधियों में शामिल किया जा रहा है।

बच्चों की सीख के लिए एकीकृत ढाँचा

बच्चों के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए NCERT और SCERT के प्रमुख शिक्षण बिंदुओं का गहराई से अध्ययन किया गया। दोनों पाठ्यक्रमों के श्रेष्ठ तत्वों को संकलित करके एक एकीकृत लर्निंग आउटकम (Consolidated Learning Outcome) तैयार किया गया है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि बच्चों को अपनी स्थानीय भाषा और परिवेश के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

पारदर्शी मॉनिटरिंग और मूल्यांकन प्रणाली

गतिविधियों का असर केवल कागजों तक सीमित न रहे, इसके लिए एक त्रि-स्तरीय मॉनिटरिंग और मूल्यांकन प्रणाली (Assessment System) लागू की गई है:

1. स्व-मूल्यांकन (Self Assessment):

ABG फेलो द्वारा नियमित रूप से स्वयं के कार्यों की समीक्षा।

2. मासिक मूल्यांकन (Monthly Assessment):

निर्धारित इंडिकेटर्स को अंकों (Marks) में विभाजित कर मासिक प्रगति की जाँच।

3. सामुदायिक आकलन:

बच्चों की उपस्थिति, सीखने की गति और ग्रामीणों की सहभागिता के आधार पर मूल्यांकन।

समय की चुनौतियों के बीच मजबूत हुआ आधार:

मई में समर कैंप से आकार लेगी नई उम्मीदें

अप्रैल का महीना 'आदर्श बाल ग्राम' और 'E-Merge' प्रोग्राम के लिए एक मजबूत आधार स्तंभ (Solid Foundation) साबित हुआ है। जहाँ एक तरफ प्रशासनिक और मैदानी स्तर पर ढांचागत बदलाव किए गए, वहीं दूसरी तरफ कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी सामने आईं।

डिजिटल शिक्षा के इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य गाँव के बच्चों को डिजिटल साक्षरता प्रदान करना और उन्हें वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार करना है। अप्रैल माह में E-Merge गतिविधियों के तहत कई प्रमुख कार्य निष्पादित किए गए:

समय प्रबंधन की चुनौती:

सुबह 9:00 बजे से शाम 5:30 बजे की समयावधि के दौरान मैदानी कार्य, बैठकों, रिपोर्टिंग और प्लानिंग के बीच संतुलन बैठाना मुख्य चुनौती रही। हालाँकि, बेहतर समय प्रबंधन (Time Management) और टीम समन्वय के जरिए इस चुनौती पर काबू पाने का प्रयास किया गया।

सकारात्मक बदलाव और प्रभाव:

तमाम व्यस्तताओं के बावजूद गाँव स्तर पर बच्चों के सीखने के रवैये और सामुदायिक जागरूकता में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है। E-Merge और ABG के संयुक्त प्रयास से बच्चों में शिक्षा के प्रति नया उत्साह जगा है।

मई माह की आगामी योजनाएं (Upcoming Plan)

अप्रैल में तैयार किए गए आधार पर मई महीने में निम्नलिखित प्राथमिकताओं पर कार्य किया जाएगा:

समर कैंप का सफल संचालन:

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए 2-माह के ग्रीष्मकालीन शिविर की जमीनी शुरुआत।

E-Merge गतिविधियों का निरंतर संचालन:

डिजिटल लर्निंग और रिपोर्टिंग को और मजबूत बनाना।

ABG संरचना का सुदृढ़ीकरण:

क्लस्टर स्तर पर कम्युनिटी टीचर्स और गरिमा दीदी के साथ मिलकर जमीनी कार्यों में तेजी लाना।

संक्षेप में, अप्रैल माह ने नियोजन, मूल्यांकन और निष्पादन का एक ऐसा खाका खींचा है जो आने वाले महीनों में ग्रामीण शिक्षा के परिदृश्य को बदलने में मील का पत्थर साबित होगा।

गरिमा कार्यक्रम:

अप्रैल माह में शैक्षणिक ढांचे और प्रशिक्षण सामग्री को मिली नई दिशा

अप्रैल का महीना 'गरिमा कार्यक्रम' (Garima Program) के लिए बेहद महत्वपूर्ण और उपलब्धि भरा रहा। कार्यक्रम की गुणवत्ता, मानकीकरण और आने वाले चरणों के प्रभावी क्रियान्वयन को मजबूत करने के उद्देश्य से इस दौरान कई बड़े स्तर के शैक्षणिक एवं रणनीतिक कार्य पूरे किए गए। विशेष रूप से 'गरिमा मंच' के संचालन और 'गरिमा फेलोशिप' को धरातल पर उतारने के लिए आवश्यक शैक्षणिक और प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने पर जोर दिया गया।

गरिमा मंच के संचालन के लिए तैयार हुआ एसओपी (SOP)

कार्यक्रम को हर स्तर पर समान और प्रभावी ढंग से चलाने के लिए एक स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (SOP) तैयार किया गया है। इस एसओपी में गरिमा मंच के मुख्य उद्देश्यों, संचालन की प्रक्रिया, प्रतिभागियों की भूमिका, बैठकों के आयोजन, सामुदायिक सहभागिता और डॉक्यूमेंटेशन से जुड़े सभी जरूरी बिंदुओं को क्रमबद्ध रूप से शामिल किया गया है।

गतिविधि-आधारित ट्रेनिंग मॉड्यूल का विकास

गरिमा फेलोज और टीम के सदस्यों की क्षमता निर्माण के लिए एक विशेष 'ट्रेनिंग मॉड्यूल' विकसित किया गया है। इस मॉड्यूल को केवल सैद्धांतिक न रखकर गतिविधि-आधारित और व्यावहारिक बनाया गया है। इसमें लैंगिक समानता (Gender Equality), महिला अधिकार, किशोर स्वास्थ्य, माहवारी स्वच्छता प्रबंधन (MHM), सुरक्षा, सहभागिता और फैसिलिटेशन स्किल्स जैसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण विषयों को जोड़ा गया है।

इंटरवेन्शन प्लानिंग और फेलोशिप करिकुलम तैयार

किशोरियों और महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से एक विस्तृत 'इंटरवेन्शन प्लानिंग डॉक्यूमेंट' पर काम किया गया। इसमें सत्रों की योजना, सामुदायिक जुड़ाव और मॉनिटरिंग के पहलुओं को तय किया गया है।

साथ ही, गरिमा फेलोज की मैदानी क्षमताओं को निखारने के लिए 'गरिमा फेलोशिप करिकुलम' और प्रथम सेमेस्टर की अकादमिक पठन सामग्री (Academic Materials) तैयार की गई है। यह सामग्री फेलोज को किताबी ज्ञान देने के साथ-साथ फील्ड की वास्तविक चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाएगी।

आगामी क्रियान्वयन का मजबूत खाका

प्रशिक्षण सामग्री को सरल और जमीनी उपयोग के अनुकूल बनाने के साथ-साथ पूरे गरिमा कार्यक्रम को एक व्यवस्थित फ्रेमवर्क में लाया गया है। एसओपी, ट्रेनिंग मॉड्यूल, करिकुलम और अकादमिक सामग्री को आपस में जोड़ते हुए एक साझा रूपरेखा तैयार की गई है, ताकि गरिमा कार्यक्रम में गुणवत्ता, मानकीकरण और प्रभावी फील्ड क्रियान्वयन को नई ऊंचाइयों पर ले जाया जा सके।

मेरे प्रिय पाठकों,

अप्रैल का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के सफर में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। इस माह 'आदर्श बाल ग्राम' के तहत 250 गाँवों को क्लस्टर में बाँटकर मैदानी टीमों (ABG फेलोज, कम्युनिटी टीचर्स और गरिमा दीदियों) को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है।

'सृजन' के अंतर्गत पेडागोजी लेसन प्लान, साइंस मेला और STEM प्रोग्राम की ठोस योजनाएं बनी हैं, वहीं 'गरिमा' कार्यक्रम के लिए SOP और विशेष ट्रेनिंग मॉड्यूल तैयार किए गए हैं। साथ ही, सिलिकॉन वैली टीम के साथ 'E-Merge' डिजिटल लर्निंग मॉडल और NCERT-SCERT आधारित 'लर्निंग आउटकम' ने हमारे शैक्षणिक प्रयासों को वैश्विक स्तर की दिशा दी है।

समय की चुनौतियों के बीच मई माह से शुरू हो रहे 2-माह के 'समर कैंप' के जरिए हम बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी तरह तैयार हैं। आइए, इसी निष्ठा और नवाचार के साथ हर बच्चे के उज्ज्वल भविष्य का संकल्प लें।

परिमल सिन्हा,

संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)

Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS